यदि तुमुन् (तुम्) प्रत्ययान्त धातु का प्रयोग परोक्ष रहे तो उसके कर्म में चतुर्थी होती है,

यथा - सेवकः फलेभ्यो याति (सेवकः फलानि आनेतुं याति) नौकर फल लाने को जाता है ।

इस वाक्य में 'आनेतुम्' का प्रयोग परोक्ष है, अतः 'फल' में चतुर्थी हुई।

वनाय गां मुमोच (वनं गन्तुं गां मुमोच)।

गणपतये नमस्कृत्य (गणपतिं प्रीणयितुं नमस्कृत्य) गणेशजी को प्रसन्न करने के लिए नमस्कार करके।

नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी हो जाती है,

यथा-ईश्वराय नमः (ईश्वर के लिए नमस्कार)

श्रीगुरवे नमः,

तुभ्यं नमः ।

नृपाय स्वस्ति (राजा का कल्याण हो)।

अग्नये स्वाहा (अग्नि को यह आहुति है)।

पितृभ्यः स्वधा ।

इन्द्राय वषट् ।

मधुकैटभाय दुर्गा अलम् ।

अलं मल्लो मल्लाय।

(यहां अलम् का अर्थ पर्याप्त है, निषेध नहीं।)

'अलम्' पर्याप्त अर्थ के वाचक शब्द प्रभु, समर्थ, शक्त आदि पदों का भी ग्रहण होता है, अतः इनके योग में भी चतुर्थी होती है, यथा-

दैत्येभ्यो विष्णुः प्रभुः, समर्थः, शक्तः वा।

प्रभुर्बुभूर्षुर्भुवनत्रयस्य ।

विधिरपि न येभ्यः प्रभवति ।

उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी (प॰)

अर्थात् - पद सम्बन्धी विभक्ति से क्रिया सम्बन्धी विभक्ति बलवती होती है। इस नियम के अनुसार 'नमस्करोति' इत्यादि क्रिया पदों के योग में चतुर्थी विभक्ति न होकर द्वितीया विभक्ति होती है- लक्ष्मीं नमस्करोति । ब्रह्मणे नमस्कुर्मः ।

परन्तु नमस्कार अर्थवाली √प्रणिपत् √प्रणम् इत्यादि धातुओं के साथ नमस्कार किये जाने वाले को द्वितीया या चतुर्थी दोनों में ही रखते हैं,

यथा-तस्मै प्रणिपत्य नन्दी।

प्रणम्य त्रिलोचनाय ।

धातारं प्रणिपत्य ।

इन धातुओं से बने हुए प्रणाम आदि शब्दों के साथ चतुर्थी का ही प्रयोग होता है,

यथा-गुरवे प्रणाममकरवम् ।

चतुर्थी के अर्थ में 'कृते' तथा 'अर्थम्' अव्ययों का प्रयोग होता है, यथा-

भोजनस्य कृते ।

'अर्थम्' के साथ समस होता है, यथा-

पठनार्थं पाठशालां गच्छामि ।